Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

Original Article

# सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि का विद्यालयी कारकों के संदर्भ में अध्ययन: बिलासपुर के विशेष संदर्भ में

**डॉ. अजय समीर कुजूर[1] मनीष मिश्र[2]**
[1]सह-आचार्य, शिक्षा विभाग, गुरु घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)
[2]शोधार्थी, शिक्षा विभाग, गुरु घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर, (छ.ग.)
ईमेल- manishjamunipur@gmail.com

**Manuscript ID:**
JRD -2026-180325
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 3(A)
Pp. 128-136
March- 2026
**Submitted:** 15 Feb. 2026
**Revised:** 25 Feb. 2026
**Accepted:** 10 Mar. 2026
**Published:** 31 Mar. 2026

**शोध सारांश**

*प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य सेकेंडरी स्तर (कक्षा 10वीं) के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि पर विद्यालयी कारकों के प्रभाव का वैज्ञानिक, वस्तुनिष्ठ एवं सांख्यिकीय विश्लेषण करना था। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु विद्यालयी कारकों जैसे- समूह साथी, शिक्षकों से अंतःक्रिया, अध्ययन आदतें, अतिरिक्त शिक्षण एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों को प्रमुख चर के रूप में सम्मिलित किया गया। अध्ययन का क्षेत्र छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर जनपद के सरकारी ग्रामीण विद्यालय रहे जहाँ से प्राप्त आंकड़ों का सांख्यिकीय परीक्षण किया गया। अध्ययन के परिणामों से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि पर इन विद्यालयी कारकों का सांख्यिकीय रूप से कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पाया गया। यह निष्कर्ष पूर्ववर्ती अनेक भारतीय एवं विदेशी अध्ययनों से आंशिक रूप से भिन्न है जहाँ इन कारकों को प्रभावकारी माना गया है। इस भिन्नता के पीछे वर्तमान सामाजिक, शैक्षिक एवं तकनीकी परिवेश में आए परिवर्तन, जैसे- डिजिटल मीडिया का बढ़ता प्रभाव, करियर विकल्पों की विविधता, आत्मनिर्णय की प्रवृत्ति एवं बाह्य प्रेरक तत्वों की भूमिका संभावित कारण हो सकते हैं। अतः यह अध्ययन इस तथ्य को रेखांकित करता है कि वर्तमान संदर्भ में विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि का निर्माण बहुआयामी कारकों से प्रभावित होता है जिनका पुनः गहन अध्ययन अपेक्षित है।*

**मुख्य शब्द:** सेकेंडरी स्तर, व्यावसायिक रुचि, विद्यालयी कारक, विद्यार्थी आदि।

## प्रस्तावना

शिक्षा जीवन का क्रियात्मक तथा व्यावहारिक पक्ष है। वास्तव में जन्म से ही बालक में कुछ ऐसी शक्तियां विद्यमान होती है। जोकि उचित वातावरण व माहौल में आने पर पुष्प की भांति खिल उठती है। अर्थात जिस प्रकार पौधों का विकास कृषि पर निर्भर होता है उसी प्रकार मानव का सर्वांगीण विकास शिक्षा पर निर्भर होता है। महात्मा गाँधी ने शिक्षा को व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास की प्रक्रिया के रूप में स्पष्ट किया। उनके शब्दों में शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक तथा मनुष्यों के शरीर, मस्तिष्क तथा आत्मा के सर्वांगीण विकास से है। प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक सुकरात के शब्दों में शिक्षा का अर्थ उन सर्वसामान्य विचारों को विकसित करना है जो प्रत्येक मनुष्य के मस्तिष्क में विलुप्त है। प्रसिद्ध विचारक जान डीवी के शब्दों में शिक्षा व्यक्ति की उन समस्त क्षमाताओं का विकास करता है जो उसे अपने वातावरण को नियंत्रित करने तथा अपनी संभावनाओं को पूरा करने योग्य बनाती है (पाण्डेय, 2010)

इस आधुनिक युग में हर कोई महत्वाकांक्षी है और इन महत्वाकांक्षाओं को तभी पूरा किया जा सकता है जब कोई विशेषज्ञ हो और उस विशेष क्षेत्र में उसकी रुचि हो जिसमें वो कार्य करना चाहता है। वह कार्य निश्चित रूप से सफल होता है जो पूरी तरह से रुचि के साथ किया जाता है और यदि विद्यार्थी भी शिक्षा में अपनी रुचि से व्यावसायिक क्षेत्र का चयन करते हैं तो उन्हें अपने वृत्ति के लिए उचित दिशा मिलती है। आज के विद्यार्थी कक्षा 10वीं या 11वीं के बाद आगे की पढ़ाई और वृत्ति के चयन के बारे में भ्रमित हैं। सभी के लिए अपनी पसंद के अनुसार कार्यक्षेत्र में चयन की गुंजाइस होनी चाहिए। यदि यह चयन किसी दबाव या तुलना में होता है तो समय, धन और ऊर्जा की बर्बादी होती है और कई बार विद्यार्थी तनाव और हताशा का शिकार होते हैं।

***Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)***
*This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.*

**Address for correspondence:**
डॉ. अजय समीर कुजूर, सह-आचार्य, शिक्षा विभाग, गुरु घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

**How to cite this article:**
*अजय समीर कुजूर, & मिश्र, . मनीष. (2026). सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि का विद्यालयी कारकों के संदर्भ में अध्ययन: बिलासपुर के विशेष संदर्भ में. Journal of Research & Development, 18(3(A)), 128–136. https://doi.org/10.5281/zenodo.19638800*

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.19638800
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

उचित कार्रवाई होनी चाहिए कि विद्यार्थी अपनी पसंद के अनुसार अपने पेशे का चयन कर सकें। शोधार्थी ने वर्तमान समस्या कथन **सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि का विद्यालयी कारकों के संदर्भ में अध्ययन: बिलासपुर के विशेष संदर्भ में** का चयन किया और समकालीन समय में विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि को जानने के प्रयास के रूप में यह अध्ययन किया गया है।

वर्तमान युग में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं रह गया है अपितु यह विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास एवं उनके भविष्य के व्यावसायिक जीवन के निर्माण से भी गहराई से जुड़ा हुआ है। वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति तथा बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण आज के विद्यार्थियों के सामने करियर विकल्पों की विविधता बढ़ गई है जिससे उनके लिए उचित व्यावसायिक चयन करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य बन गया है। विशेष रूप से सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थी ऐसी अवस्था में होते हैं जहाँ वे अपनी रुचियों, क्षमताओं एवं संभावनाओं को समझने का प्रयास करते हैं। इस संदर्भ में विद्यालयी कारक जैसे- समूह साथी का प्रभाव, शिक्षकों से अंतःक्रिया, अध्ययन आदतें, अतिरिक्त शिक्षण एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ उनकी व्यावसायिक रुचि को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मनु एवं अब्राफी (2025) के अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि विद्यार्थियों के करियर चयन पर व्यक्तिगत रुचियों के साथ-साथ सामाजिक एवं विद्यालयी परिवेश का भी गहरा प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार यादव एवं अन्य (2025) ने ग्रामीण युवाओं के संदर्भ में यह पाया कि सहपाठी समूह विद्यार्थियों के करियर विकल्पों को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है क्योंकि विद्यार्थी अपने मित्रों के विचारों, अपेक्षाओं एवं व्यवहार से प्रेरित होते हैं।

सहपाठी समूह के प्रभाव को लेकर अनेक शोधों ने यह सिद्ध किया है कि यह कारक विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिरुचि के निर्माण में अत्यंत प्रभावशाली होता है। ओदुह (2021), उगोजी एवं इहेग्बु (2011) तथा अलिका (2010) के अध्ययनों में यह निष्कर्ष निकाला गया कि सहपाठी समूह न केवल विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन को प्रभावित करता है बल्कि उनके करियर निर्णयों को भी दिशा प्रदान करता है। सहपाठी समूह के माध्यम से विद्यार्थियों को विभिन्न करियर विकल्पों की जानकारी प्राप्त होती है तथा वे अपने साथियों के अनुभवों एवं सुझावों के आधार पर निर्णय लेते हैं। इसके अतिरिक्त, शिक्षक–छात्र अंतःक्रिया भी एक महत्वपूर्ण विद्यालयी कारक है जो विद्यार्थियों की रुचि एवं प्रेरणा को प्रभावित करता है। हफ़ीज़ (2021) ने अपने अध्ययन में यह दर्शाया कि प्रशिक्षित एवं प्रभावी शिक्षण विधियाँ विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं रुचि को बढ़ाती हैं। इसी प्रकार रहमान एवं अन्य (2010) ने पाया कि सकारात्मक शिक्षक–छात्र संबंध विद्यार्थियों की प्रेरणा एवं उपलब्धि को बढ़ावा देते हैं जिससे वे अपने करियर के प्रति अधिक सजग एवं स्पष्ट होते हैं। इस प्रकार विद्यालय में उपलब्ध शैक्षिक वातावरण एवं शिक्षक का मार्गदर्शन विद्यार्थियों के व्यावसायिक विकास में आधारभूत भूमिका निभाते हैं।

अध्ययन आदतें (Study Habits) भी विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक हैं। टस एवं अन्य (2020), हफ़ीज़ (2019), मंडल एवं अन्य (2018) एवं अडिन्ना (2017) के शोध यह संकेत करते हैं कि जिन विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें व्यवस्थित, नियमित एवं उद्देश्यपूर्ण होती हैं वे अपने शैक्षिक लक्ष्यों के प्रति अधिक जागरूक होते हैं और अपने करियर विकल्पों के प्रति स्पष्ट दृष्टिकोण विकसित करते हैं। इसके विपरीत कमजोर अध्ययन आदतें विद्यार्थियों में अनिश्चितता एवं भ्रम की स्थिति उत्पन्न कर सकती हैं। सिंह एवं निधि (2014) ने यह भी पाया कि अध्ययन आदतों एवं विद्यार्थियों के करियर वरीयताओं के बीच सकारात्मक सहसंबंध पाया जाता है। इसके अतिरिक्त, विद्यालयी वातावरण जैसे संसाधनों की उपलब्धता, पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ, कैरियर मार्गदर्शन सेवाएँ एवं अनुकूल शैक्षिक माहौल भी विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि को प्रभावित करते हैं। सेतिया एवं रंजन (2016) के अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया कि सकारात्मक विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं अध्ययन आदतों को सुदृढ़ करता है जो आगे चलकर उनके करियर चयन को प्रभावित करता है।

सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ भी विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिरुचि के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये गतिविधियाँ विद्यार्थियों को अपनी छिपी हुई प्रतिभाओं एवं रुचियों को पहचानने का अवसर प्रदान करती हैं तथा उनके आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता एवं सामाजिक कौशल का विकास करती हैं। विल्सन (2019), अंजुम (2018) एवं फ्रीमैन (2013) के अध्ययनों में यह पाया गया कि सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी करने वाले विद्यार्थी न केवल शैक्षिक रूप से बेहतर प्रदर्शन करते हैं अपितु वे अपने करियर के प्रति भी अधिक स्पष्ट एवं आत्मविश्वासी होते हैं। इसी प्रकार असेफा (2020) एवं मासोनी (2011) ने यह निष्कर्ष निकाला कि इन गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में निर्णय लेने की क्षमता एवं व्यावसायिक जागरूकता का विकास होता है। विद्यालयों में खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम, वाद-विवाद, विज्ञान मेले एवं अन्य गतिविधियाँ विद्यार्थियों को विभिन्न क्षेत्रों का अनुभव प्रदान करती हैं जिससे वे अपने रुचि क्षेत्रों की पहचान कर पाते हैं।

उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि का निर्माण एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसमें विद्यालयी कारकों की केंद्रीय भूमिका होती है। समूह साथी, शिक्षकों से अंतःक्रिया, अध्ययन आदतें, विद्यालयी वातावरण एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ मिलकर विद्यार्थियों के करियर चयन को प्रभावित करती हैं। अतः "सेकेंडरी के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि का विद्यालयी कारकों के संदर्भ में अध्ययन" विषय वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

**शोध औचित्य**

वर्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप केवल ज्ञानार्जन तक सीमित न रहकर विद्यार्थियों के समग्र विकास एवं उनके भविष्य के व्यावसायिक निर्माण से जुड़ गया है। ऐसे परिप्रेक्ष्य में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि का अध्ययन अत्यंत आवश्यक एवं औचित्यपूर्ण हो जाता है क्योंकि यही वह अवस्था है जहाँ विद्यार्थी अपने करियर के प्रति प्रारंभिक निर्णय लेने लगते हैं। हालांकि यह देखा गया है कि अनेक विद्यार्थी अपनी रुचि, क्षमता एवं अवसरों के बीच संतुलन स्थापित नहीं कर पाते जिसके कारण वे अनुचित करियर चयन कर लेते हैं। इस समस्या के समाधान के लिए विद्यालयी कारकों की भूमिका को समझना आवश्यक है। यह शोध इसलिए भी औचित्यपूर्ण है क्योंकि विद्यालय वह प्रमुख संस्था है जहाँ विद्यार्थी अधिकतम समय व्यतीत करते हैं और जहाँ उनका बौद्धिक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास होता है। शिक्षक का मार्गदर्शन, सहपाठी समूह का प्रभाव, अध्ययन आदतें तथा सह-पाठ्यक्रमिक गतिविधियाँ विद्यार्थियों के विचारों, दृष्टिकोण एवं निर्णय क्षमता को प्रभावित करती हैं। यदि इन कारकों का सकारात्मक उपयोग किया जाए तो विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि को सही दिशा प्रदान की जा सकती है। इसके अतिरिक्त वर्तमान में करियर मार्गदर्शन सेवाओं की कमी एवं असमानता के कारण भी यह आवश्यक हो जाता है कि ऐसे कारकों की पहचान की जाए जो विद्यार्थियों के करियर चयन को प्रभावित करते हैं।

अतः यह शोध शैक्षिक योजनाकारों, शिक्षकों एवं अभिभावकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा क्योंकि इसके निष्कर्षों के आधार पर विद्यार्थियों के लिए प्रभावी करियर मार्गदर्शन कार्यक्रम विकसित किए जा सकते हैं। साथ ही यह अध्ययन शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने एवं विद्यार्थियों को उनकी क्षमता एवं रुचि के अनुरूप उचित व्यावसायिक दिशा प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

**शोध समस्या कथन**

सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि का विद्यालयी कारकों के संदर्भ में अध्ययन: बिलासपुर के विशेष संदर्भ में

**शोध उद्देश्य**

1. सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि पर समूह साथी के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि पर शिक्षकों से अंत:क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि पर अध्ययन आदत के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि पर अतिरिक्त शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन करना।
5. सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि पर सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के प्रभाव का अध्ययन करना।

**शोध परिकल्पना**

1. समूह साथी से प्रेरणा प्राप्त करने वाले एवं प्राप्त नहीं करने वाले सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक रुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. शिक्षकों से व्यक्तिगत अन्त:क्रिया करने वाले एवं नहीं करने वाले सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक रुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. अध्ययन आदत रखने वाले एवं नहीं रखने वाले सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक रुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. अतिरिक्त शिक्षण सहायता प्राप्त करने वाले एवं प्राप्त नहीं करने वाले सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक रुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
5. सह पाठ्यक्रम गतिविधियों में भाग लेने वाले एवं नहीं लेने वाले सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक रुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

**शोध प्रविधि**

प्रस्तुत शोध वर्णात्मक अनुसंधान के अंतर्गत मात्रात्मक प्रकृति का है। शोध के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु प्राथमिक रूप से प्रदत्तों के संकलन के लिए शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया एवं संकलित किए गए आंकड़ों के उद्देश्य के अनुसार मात्रात्मक विश्लेषण किया गया। इस विधि के अंतर्गत चयनित नमूने से दो मानकीकृत प्रश्नावली एवं एक स्वनिर्मित प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़े एकत्र किए गए है। शोध के लिए बिलासपुर जिले के सेकेंडरी स्तर के 10वीं कक्षा के ग्रामीण सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया गया है। संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मात्रात्मक सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया।

**न्यायदर्श**

प्रस्तुत शोध की जनसंख्या में छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर ज़िले के चयनित 4 विकासखण्ड (ब्लॉक) बिल्हा, कोटा, तखतपुर एवं मस्तूरी के अंतर्गत स्थित कुल 28 सेकेंडरी स्तर के सरकारी ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थी सम्मिलित हैं। इन विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 10वीं के कुल 405 विद्यार्थियों को शोध की जनसंख्या के रूप में निर्धारित किया गया है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

**प्रसामान्यता परीक्षण**

| | | | Statistic | Std. Error |
|---|---|---|---|---|
| व्यावसायिक रुचि | Mean | | 95.0198 | .64317 |
| | 95% Confidence interval for Mean | Lower Bound | 93.7554 | |
| | | Upper Bound | 96.2841 | |
| | 5% Trimmed Mean | | 94.9444 | |
| | Median | | 95.0000 | |
| | Variance | | 167.534 | |
| | Std. Deviation | | 12.94350 | |
| | Minimum | | 62.00 | |
| | Maximun | | 135.00 | |
| | Range | | 73.00 | |
| | Interquartile Range | | 18.00 | |
| | Skewness | | .101 | .121 |
| | Kurtosis | | .039 | .242 |

**व्यावसायिक रुचि का वर्णनात्मक सांख्यिकीय विश्लेषण**

प्रस्तुत अध्ययन में सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि से संबंधित आँकड़ों का वर्णनात्मक सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया। प्राप्त परिणामों के अनुसार व्यावसायिक रुचि का माध्य (Mean = 95.01) पाया गया जो यह संकेत करता है कि अध्ययन में सम्मिलित अधिकांश विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि औसत से कुछ ऊपर के स्तर पर स्थित है। माध्य की मानक त्रुटि (Std. Error= 0.64) अत्यंत कम है जिससे यह स्पष्ट होता है कि माध्य मान स्थिर, विश्वसनीय एवं प्रतिनिधिक है। माध्य के लिए 95% विश्वास अंतराल का निचला मान 93.75 तथा ऊपरी मान 96.28 पाया गया जिससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जनसंख्या का वास्तविक माध्य इसी सीमा के भीतर स्थित होने की प्रबल संभावना रखता है।

5% ट्रिम्ड मीन (94.94) तथा माध्यिका (Median= 95.00) का माध्य के अत्यधिक समीप होना इस तथ्य को दर्शाता है कि आँकड़ों में अत्यधिक उच्च या निम्न स्कोर (Outliers) का प्रभाव नगण्य है। इससे वितरण की संतुलित प्रकृति की पुष्टि होती है। प्रसरण (Variance= 167.53) एवं मानक विचलन (Std. Deviation= 12.94) यह संकेत देते हैं कि विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि में मध्यम स्तर की विविधता विद्यमान है। अर्थात् अधिकांश विद्यार्थी माध्य के आसपास ही केंद्रित हैं परंतु कुछ विद्यार्थियों में अपेक्षाकृत अधिक या कम व्यावसायिक रुचि भी पाई गई है।

न्यूनतम स्कोर 62 तथा अधिकतम स्कोर 135 होने के कारण परास (Range= 73) प्राप्त हुई, जो यह दर्शाती है कि विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि का स्तर एक विस्तृत क्षेत्र में फैला हुआ है। अंतर-चतुर्थक परास (Interquartile Range= 18) यह स्पष्ट करता है कि मध्य के 50% विद्यार्थी अपेक्षाकृत संकीर्ण सीमा में स्थित हैं, जिससे आँकड़ों की आंतरिक स्थिरता सिद्ध होती है। वितरण की वक्रता (Skewness= 0.101) लगभग शून्य के समीप है अतः वितरण लगभग सममित (Symmetrical) है। इसी प्रकार कर्टोसिस (0.039) का मान भी शून्य के निकट है जो यह दर्शाता है कि वितरण न तो अत्यधिक चपटा है और न ही अत्यधिक नुकीला, बल्कि सामान्य वितरण (Normal Distribution) के अनुरूप है।

अतः उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि का वितरण सामान्य प्रकृति का है तथा आँकड़े पैरामीट्रिक सांख्यिकीय परीक्षणों (जैसे t-परीक्षण, सहसंबंध) के प्रयोग हेतु पूर्णतः उपयुक्त हैं। यह विश्लेषण अध्ययन की विश्वसनीयता एवं निष्कर्षों की वैधता को सुदृढ़ आधार प्रदान करता है।

**प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण एवं अर्थापन**

**शून्य परिकल्पना Ho1-** समूह साथी से प्रेरणा प्राप्त करने वाले एवं प्रेरणा प्राप्त नहीं करने वाले सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक रुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

**सारणी क्रमांक 4.1**

| क्र. सं. | समूह का नाम | सांख्यिकीय आकार (N) | औसत (Mean) | मानक विचलन (SD) | t- मूल्य | df | p- मूल्य | निर्णय (Remark) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | साथी समूह से प्रेरणा प्राप्त नहीं करने वाले | 111 | 95.6 | 13.2 | 0.531 | 403 | 0.595 | शून्य परिकल्पना स्वीकार किया गया (NS) |
| 2. | साथी समूह से प्रेरणा प्राप्त करने वाले | 294 | 94.8 | 12.9 | | | | |

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

क्रिटिकल वैल्यू (Critical Value) df = 403 पर 0.05 के स्तर पर = 1.96 है।

**सारणी संख्या 4.1** से यह स्पष्ट होता है कि समूह साथी से प्रेरणा प्राप्त करने वाले तथा प्रेरणा प्राप्त नहीं करने वाले सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि विद्यालयी कारकों के संबंध में गणना से प्राप्त t-मूल्य 0.531 है जो कि क्रिटिकल वैल्यू 1.96 से कम है और p-मूल्य 0.595 हैं जो df 403 के लिए 0.05 के स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः यह निष्कर्ष निकाला गया कि समूह साथी से प्रेरणा प्राप्त करने वाले एवं प्रेरणा प्राप्त नहीं करने वाले विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। इसलिए शून्य परिकल्पना (Ho)- "समूह साथी से प्रेरणा प्राप्त करने वाले एवं प्रेरणा प्राप्त नहीं करने वाले सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा" स्वीकार की जाती है।

यह निष्कर्ष इंगित करता है कि समूह साथी जैसा विद्यालयी कारक सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि के विकास पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं डालता है। इसका अर्थ है कि विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि केवल समूह साथी से प्रेरणा प्राप्त करने वाले तथा प्रेरणा प्राप्त नहीं करने वाले पर निर्भर नहीं करती बल्कि अन्य शैक्षिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत कारक भी इसके विकास में भूमिका निभा सकते हैं।

**शून्य परिकल्पना Ho2-** शिक्षकों से व्यक्तिगत अन्तःक्रिया करने वाले एवं नहीं करने वाले सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक रुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

**सारणी क्रमांक 4.2**

| क्र. सं. | समूह का नाम | सांख्यिकीय आकार (N) | औसत (Mean) | मानक विचलन (SD) | t- मूल्य | df | p- मूल्य | निर्णय (Remark) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | शिक्षकों से अंतःक्रिया नहीं करने वाले | 171 | 95.3 | 11.9 | 0.315 | 403 | 0.753 | शून्य परिकल्पना स्वीकार किया गया (NS) |
| 2. | शिक्षकों से अंतःक्रिया करने वाले | 234 | 94.8 | 13.7 | | | | |

क्रिटिकल वैल्यू (Critical Value) df = 403 पर 0.05 के स्तर पर = 1.96 है।

**सारणी संख्या 4.2** से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षकों से अंतःक्रिया करने वाले एवं शिक्षकों से अंतःक्रिया नहीं करने वाले सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि का विद्यालयी कारकों के संबंध में गणना से प्राप्त t-मूल्य 0.315 है जो कि क्रिटिकल वैल्यू 1.96 से कम है और p-मूल्य 0.753 हैं जो df 403 के लिए 0.05 के स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः यह पाया गया कि शिक्षकों से अंतःक्रिया करने वाले एवं शिक्षकों से अंतःक्रिया नहीं करने वाले विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। इसलिए शून्य परिकल्पना (Ho)- "शिक्षकों से अंतःक्रिया करने वाले एवं शिक्षकों से अंतःक्रिया नहीं करने वाले सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा" स्वीकार की जाती है।

अतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षकों से अंतःक्रिया जैसा विद्यालयी कारक सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि के विकास पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं डालता है। इसका अर्थ है कि विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि केवल शिक्षकों से अंतःक्रिया करने वाले एवं शिक्षकों से अंतःक्रिया नहीं करने वाले पर निर्भर नहीं करती बल्कि अन्य शैक्षिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत कारक भी इसके विकास में भूमिका निभा सकते हैं।

**शून्य परिकल्पना Ho3-** अध्ययन आदत रखने वाले एवं नहीं रखने वाले सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक रुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

**सारणी क्रमांक 4.3**

| क्र. सं. | समूह का नाम | सांख्यिकीय आकार (N) | औसत (Mean) | मानक विचलन (SD) | t- मूल्य | df | p- मूल्य | निर्णय (Remark) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | अध्ययन आदत नहीं रखने वाले | 45 | 96.9 | 13.5 | 1.052 | 403 | 0.293 | शून्य परिकल्पना स्वीकार किया गया (NS) |
| 2. | अध्ययन आदत रखने वाले | 360 | 94.8 | 12.9 | | | | |

क्रिटिकल वैल्यू (Critical Value) df = 403 पर 0.05 के स्तर पर = 1.96 है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

**सारणी संख्या 4.3** से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन आदत रखने वाले एवं नहीं रखने वाले सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि का विद्यालयी कारकों के संबंध में गणना से प्राप्त t-मूल्य 1.052 है जो कि क्रिटिकल वैल्यू 1.96 से कम है और p-मूल्य 0.293 हैं जो df 403 के लिए 0.05 के स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः यह देखा गया कि अध्ययन आदत रखने वाले एवं नहीं रखने वाले विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। इसलिए शून्य परिकल्पना (Ho)- "अध्ययन आदत रखने वाले एवं नहीं रखने वाले सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा" स्वीकार की जाती है।
इसमें यह इंगित करता है कि अध्ययन आदत जैसा विद्यालयी कारक सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि के विकास पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं डालता है। इसका अर्थ है कि विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि केवल अध्ययन आदत रखने वाले एवं नहीं रखने वाले पर निर्भर नहीं करती बल्कि अन्य शैक्षिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत कारक भी इसके विकास में भूमिका निभा सकते हैं।

**शून्य परिकल्पना Ho4-** अतिरिक्त शिक्षण सहायता प्राप्त करने वाले एवं प्राप्त नहीं करने वाले सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक रुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

**सारणी क्रमांक 4.4**

| क्र. सं. | समूह का नाम | सांख्यिकीय आकार (N) | औसत (Mean) | मानक विचलन (SD) | t- मूल्य | df | p- मूल्य | निर्णय (Remark) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | अतिरिक्त शिक्षण सहायता प्राप्त नहीं करने वाले | 383 | 95.0 | 12.9 | 0.193 | 403 | 0.847 | शून्य परिकल्पना स्वीकार किया गया (NS) |
| 2. | अतिरिक्त शिक्षण सहायता प्राप्त करने वाले | 22 | 94.5 | 13.5 | | | | |

क्रिटिकल वैल्यू (Critical Value) df = 403 पर 0.05 के स्तर पर = 1.96 है।

**सारणी संख्या 4.4** से यह स्पष्ट होता है कि अतिरिक्त शिक्षण सहायता प्राप्त करने वाले एवं प्राप्त नहीं करने वाले सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि विद्यालयी कारकों के संबंध में गणना से प्राप्त t-मूल्य 0.193 है जो कि क्रिटिकल वैल्यू 1.96 से कम है और p-मूल्य 0.847 हैं जो df 403 के लिए 0.05 के स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः यह प्राप्त हुआ कि अतिरिक्त शिक्षण सहायता प्राप्त करने वाले एवं प्राप्त नहीं करने वाले विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। इसलिए शून्य परिकल्पना (Ho)- "अतिरिक्त शिक्षण सहायता प्राप्त करने वाले एवं प्राप्त नहीं करने वाले सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा" अतः शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।
यह देखा गया कि अतिरिक्त शिक्षण सहायता जैसे विद्यालयी कारक सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि के विकास पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं डालता है। इसका अर्थ है कि विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि केवल अतिरिक्त शिक्षण सहायता प्राप्त करने वाले एवं प्राप्त नहीं करने वाले पर निर्भर नहीं करती, बल्कि अन्य शैक्षिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत कारक भी इसके विकास में भूमिका निभा सकते हैं।

**शून्य परिकल्पना Ho5-** सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में भाग लेने वाले एवं नहीं लेने वाले सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक रुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

**सारणी क्रमांक 4.5**

| क्र. सं. | समूह का नाम | सांख्यिकीय आकार (N) | औसत (Mean) | मानक विचलन (SD) | t- मूल्य | df | p- मूल्य | निर्णय (Remark) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में भाग नहीं लेने वाले | 382 | 95.1 | 13.0 | 0.472 | 403 | 0.638 | शून्य परिकल्पना स्वीकार किया गया (NS) |
| 2. | सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में भाग लेने वाले | 23 | 93.8 | 11.6 | | | | |

क्रिटिकल वैल्यू (Critical Value) df = 403 पर 0.05 के स्तर पर = 1.96 है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

**सारणी संख्या 4.5** से यह स्पष्ट होता है कि सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में भाग लेने वाले एवं नहीं लेने वाले सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि विद्यालयी कारकों के संबंध में गणना से प्राप्त t-मूल्य 0.472 है जो कि क्रिटिकल वैल्यू 1.96 से कम है और p-मूल्य 0.638 हैं जो df 403 के लिए 0.05 के स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः यह कह सकते है कि सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में भाग लेने वाले एवं नहीं लेने वाले विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। इसलिए शून्य परिकल्पना (Ho)- "सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में भाग लेने वाले एवं नहीं लेने वाले सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा" स्वीकार की जाती है।

यह समझा जा सकता है कि सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों जैसा विद्यालयी कारक सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि के विकास पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं डालता है। इसका अर्थ है कि विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि केवल सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में भाग लेने वाले एवं नहीं लेने वाले पर निर्भर नहीं करती बल्कि अन्य शैक्षिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत कारक भी इसके विकास में भूमिका निभा सकते हैं।

**शोध निष्कर्ष**

**शून्य परिकल्पना एवं निष्कर्ष**

| क्र. सं. | परिकल्पना | निर्णय |
|---|---|---|
| 1. | समूह साथी से प्रेरणा प्राप्त करने वाले एवं प्राप्त नहीं करने वाले सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक रुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। | शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है। |
| 2. | शिक्षकों से व्यक्तिगत अन्तःक्रिया करने वाले एवं नहीं करने वाले सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक रुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। | शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है। |
| 3. | अध्ययन आदत रखने वाले एवं नहीं रखने वाले सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक रुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। | शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है। |
| 4. | अतिरिक्त शिक्षण सहायता प्राप्त करने वाले एवं प्राप्त नहीं करने वाले सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक रुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। | शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है। |
| 5. | सह पाठ्यक्रम गतिविधियों में भाग लेने वाले एवं नहीं लेने वाले सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक रुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। | शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है। |

**संक्षिप्त विवेचना एवं सारांश**

उपरोक्त अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि को विद्यालयी कारक अपेक्षित रूप से प्रभावित नहीं कर पा रहे हैं। जिसके पीछे अनेक संरचनात्मक एवं कार्यात्मक कारण निहित हो सकते हैं। विद्यालय का सरकारी तथा ग्रामीण क्षेत्र में स्थित होना, आधारभूत संसाधनों की कमी, प्रयोगशालाओं एवं पुस्तकालयों का अभाव, करियर परामर्श सेवाओं की अनुपलब्धता तथा प्रशिक्षित मार्गदर्शकों का न होना प्रमुख कारण हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का रूढ़ और परीक्षा-केंद्रित होना, पाठ्यक्रम का स्थानीय आवश्यकताओं और रोजगारपरक कौशलों से असंबद्ध होना, विद्यार्थियों की व्यक्तिगत रुचियों की पहचान हेतु मनोवैज्ञानिक परीक्षणों या अभिरुचि सूचियों का प्रयोग न किया जाना भी प्रभाव को सीमित कर सकता है। शिक्षक-विद्यार्थी अंतःक्रिया की कमी, प्रेरणादायी वातावरण का अभाव, सह-पाठ्यक्रम एवं कौशल आधारित गतिविधियों का न होना, उद्योग-विद्यालय समन्वय की कमी तथा डिजिटल संसाधनों तक सीमित पहुँच भी बाधक तत्व हो सकते हैं। साथ ही विद्यार्थियों को भविष्य की संभावनाओं, उभरते करियर विकल्पों और प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाओं के प्रति पर्याप्त जागरूक न किया जाना उनकी वृत्ति वरीयता के विकास को प्रभावित कर सकता है। इन सभी कारणों से विद्यालयी कारक विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि एवं वृत्ति वरीयता के समुचित विकास में अपेक्षित भूमिका नहीं निभा पा रहे होंगे।

**संदर्भ ग्रंथ-सूची**

1. मनु, यवोन अब्राफी. (2025). इन्वेस्टिगेटिंग फैक्टर्स इन्फ्लुएंसिंग करियर चॉइस अमंग स्टूडेंट्स इन गर्ल्स' सीनियर हाई स्कूल इन द कुमासी मेट्रोपोलिस. जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड लर्निंग टेक्नोलॉजी, 6(9), 809-826.
2. यादव, पूनम, ठाकुरल, आशा चावला, एवं विग, दीपिका. (2025). द रोल ऑफ पीयर ग्रुप इन्फ्लुएंस इन शेपिंग करियर चॉइसेज़ ऑफ रूरल यूथ इन थ्री इंडियन स्टेट्स. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एग्रीकल्चर एक्सटेंशन एंड सोशल डेवलपमेंट, 8(5), 129-135.
3. कैपारोस, आर्निएलिन. (2023). इफेक्ट्स ऑफ स्टूडेंट्स एक्स्ट्रा करिकुलर एक्टिविटीज टू स्कूल्स इंटरनल एफिशिएंसी: बेसिस फॉर स्कूल इम्प्रूवमेंट मैनेजमेंट प्लान. साइकोलॉजी एंड एजुकेशन: ए मल्टिडिसिप्लिनरी जर्नल, 7(10), 898-909.

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

4. ओदुह, विलियम अक्पोरोबारोह, अगबूला, जेम्स ओदुनायो, एवं एइभालेमेन, फेथ ऐवानेही. (2021). इन्फ्लुएंस ऑफ पीयर ग्रुप ऑन द करियर चॉइस ऑफ सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इन साउथ सेनेटोरियल डिस्ट्रिक्ट ऑफ ईडो स्टेट, नाइजीरिया. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन, लर्निंग एंड डेवलपमेंट, 9(3), 1-9.
5. हफ़ीज़, मुहम्मद. (2021). इम्पैक्ट ऑफ टीचर's ट्रेनिंग ऑन इंटरेस्ट एंड एकेडमिक अचीवमेंट्स ऑफ स्टूडेंट्स बाय मल्टिपल टीचिंग मेथड्स. जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड ट्रेनिंग स्टडीज़, 9(3), 1–8.
6. असेफा, मेसेरेट. (2020). चैलेंजेस एंड इम्पैक्ट्स ऑफ एक्स्ट्रा करिकुलर एक्टिविटीज ऑन स्टूडेंट्स: इम्प्लिकेशन फॉर सेकेंडरी स्कूल्स इन अदीस अबाबा, इथियोपिया. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन एंड साइंस, 6(2), 245-256.
7. टस, झोसेल, रायो, फ्रांसिस, एवं लुबो, रेमार्क. (2020). द लर्नर्स' स्टडी हैबिट्स एंड इट्स रिलेशन ऑन देयर एकेडमिक परफॉर्मेंस. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ऑल रिसर्च एजुकेशन एंड साइंटिफिक मेथड्स, 8(12), 32-36.
8. विल्सन, निक्की. (2019). इम्पैक्ट ऑफ एक्स्ट्रा करिकुलर एक्टिविटीज ऑन स्टूडेंट्स. जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड प्रैक्टिस, 9(1), 22-30.
9. सुलिवन, पैट्रिक. (2019). एक्स्ट्रा-करिकुलर एक्टिविटीज इन इंग्लिश सेकेंडरी स्कूल्स: व्हाट आर दे? व्हाट डू दे ऑफर पार्टिसिपेटिंग स्टूडेंट्स? हाउ डू दे इन्फॉर्म ईपी प्रैक्टिस? एजुकेशनल साइकोलॉजी इन प्रैक्टिस, 35(4), 420-435.
10. न्क्वोसिबे, हेलेन न्वेन्ना एने. (2019). पीयर ग्रुप एंड एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इन आबा नॉर्थ लोकल गवर्नमेंट एरिया. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड इवैल्युएशन, 5(5), 20-27.
11. हफ़ीज़, मुहम्मद. (2019). स्टडी हैबिट्स अमंग सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स ऑफ हैदराबाद: ए कम्पेरेटिव एनालिसिस. बुलेटिन ऑफ एजुकेशन एंड रिसर्च, 41(2), 25-34.
12. सन्नी, डॉ. कुदीरत बिम्बो. (2019). स्टडी हैबिट्स एंड एकेडमिक परफॉर्मेंस ऑफ सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इन मैथमेटिक्स: ए केस स्टडी ऑफ सेलेक्टेड सेकेंडरी स्कूल्स इन उयो लोकल एजुकेशन काउंसिल. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एंड इनोवेशन इन सोशल साइंस, 3(6), 45-52.
13. जेना, सुप्रवा, एवं दत्ता, प्रणबकांति. (2018). एटिट्यूड ऑफ सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स टुवर्ड्स वोकेशनल एजुकेशन इन मायूरभंज डिस्ट्रिक्ट. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एंड एनालिटिकल रिव्यूज़, 5(3), 312-318.
14. मंडल, स्मिताराणी, नायक, निशिविजिता, मोहंती, लक्ष्मीप्रिया, एवं मोहंती, स्नेहासिस. (2018). स्टडी हैबिट अमंग हायर सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इन रिलेशन टू देयर एकेडमिक अचीवमेंट. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, 6(1), 152-160.
15. अजिबाडे, बसीत ओलालेकन. (2018). इन्फ्लुएंस ऑफ पीयर ग्रुप रिलेशनशिप ऑन द एकेडमिक परफॉर्मेंस ऑफ स्टूडेंट्स इन सेकेंडरी स्कूल्स (ए केस स्टडी ऑफ सेलेक्टेड सेकेंडरी स्कूल्स इन अतीबा लोकल गवर्नमेंट एरिया ऑफ ओयो स्टेट). इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड रिसर्च, 6(1), 35-44.
16. फिलाडे, बैंकोले अदेयेमी, बेलो, एलिस अदेयोके, उवाओमा, क्रिस्टियाना ओ., अन्वानाने, बिडेमी बैसी, एवं न्वांगबुरुका, केमी. (2018). पीयर ग्रुप इन्फ्लुएंस ऑन एकेडमिक परफॉर्मेंस ऑफ अंडरग्रेजुएट स्टूडेंट्स इन बैबकॉक यूनिवर्सिटी, ओगुन स्टेट. जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड प्रैक्टिस, 9(12), 45-52.
17. अंजुम, शबीहा. (2018). इम्पैक्ट ऑफ एक्स्ट्रा करिकुलर एक्टिविटीज ऑन एकेडमिक परफॉर्मेंस ऑफ स्टूडेंट्स एट सेकेंडरी लेवल. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड रिसर्च, 6(3), 123-130.
18. अडिन्रा, पैट्रिशिया इफेइनवा. (2017). स्टडी हैबिट्स ऐज़ कोरिलेट ऑफ एकेडमिक अचीवमेंट अमंग सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इन अनाम्ब्रा स्टेट. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड इवैल्युएशन, 3(8), 7-15.
19. हैदर, अली, एवं वर्मा, अलका. (2017). एन एक्सप्लोरेटरी स्टडी ऑन स्टडी हैबिट्स ऑफ क्लास 10th स्टूडेंट्स. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च, 3(7), 45-47.
20. उमैर, मोहम्मद, एवं अली, प्रो. मोहम्मद मुज़ाहिर. (2017). ए स्टडी ऑफ वोकेशनल इंटरेस्ट अमंग सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड एजुकेशनल रिसर्च, 2(4), 27–30.

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

21. विक्टोरिया एजुकेशन डिस्ट्रिक्ट. (2017). ए केस स्टडी ऑफ सिक्स्थ फॉर्म सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स' परसेप्शन्स ऑन पार्टिसिपेशन इन स्कूल-बेस्ड एक्स्ट्रा-करिकुलर एक्टिविटीज. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड रिसर्च, 5(9), 85-94.
22. एन., डॉ. रवि एम. (2017). एक्स्ट्रा करिकुलर एक्टिविटी ए टूल बियॉन्ड करिकुलम फॉर स्टूडेंट एम्पावरमेंट. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड एजुकेशनल रिसर्च, 2(5), 12-15.
23. चंद, सुरेश. (2016). इन्फ्लुएंस ऑफ पैरेंटल ऑक्युपेशन ऑन स्टडी हैबिट्स ऑफ सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन सोशल साइंसेज़, 6(7), 310–315.
24. ओकुडो, ओडिनाकोलीसा क्रिस्टोफर. (2016). द पीयर ग्रुप प्रेशर ऐज़ कोरिलेट टू द एकेडमिक अचीवमेंट्स एंड करियर चॉइस ऑफ पब्लिक सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स फ्रॉम अनाम्ब्रा स्टेट, नाइजीरिया. जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड प्रैक्टिस, 7(5), 26-32.
25. सेतिया, रूचि, एवं रंजन, डॉ. राजीव. (2016). ए कोरिलेटिव स्टडी ऑन रिलेशनशिप ऑफ स्टडी हैबिट्स एंड स्कूल एनवायरनमेंट विथ एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड साइकोलॉजिकल रिसर्च, 5(3), 45-49.
26. लक्ष्मी, यू. सिवा. (2015). स्टडी हैबिट्स एंड एजुकेशनल इंटरेस्ट्स ऑफ सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स ए स्टडी. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टिडिसिप्लिनरी रिसर्च एंड डेवलपमेंट, 2(4), 45-48.
27. सिंह, डॉ. मुख्तियार, एवं निधि. (2014). करियर प्रेफरेंस ऑफ सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इन रिलेशन टू स्टडी हैबिट्स एंड एटिट्यूड्स. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन एंड मेथडोलॉजी, 5(2), 756-760.
28. ओलाडेले, बाबातुंडे के., एवं कोमोलाफे, डेबोरा ए. (2013). पीयर ग्रुप्स, पैरेंटल फैक्टर्स, एंड स्टूडेंट्स' एकेडमिक अचीवमेंट इन सेकेंडरी स्कूल इकोनॉमिक्स. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एशियन सोशल साइंस, 3(2), 421-430.
29. फ्रीमैन, रॉबर्ट. (2013). द रिलेशनशिप बिटवीन एक्स्ट्रा करिकुलर एक्टिविटीज एंड एकेडमिक अचीवमेंट. जर्नल ऑफ स्टूडेंट अफेयर्स रिसर्च एंड प्रैक्टिस, 50(2), 205-220.